

संपादक की कलम से

आखिर भारत का 'असली' दुश्मन कौन ?

जब ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष सैम पित्रोदा दलील देते हैं कि भारत को चीन को अपना दुश्मन नहीं मानना चाहिए, तो सवाल पैदा होता है कि आखिर इंडिया गठबंधन के मुख्य घटक समाजवादी पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष और तत्कालीन रक्षा मंत्री मुलामय सिंज यादव ने चीन को भारत का दुश्मन नम्बर वन क्यों करार दिया था?

दरअसल, 1962 के भारत-चीन युद्ध से लेकर 2020 के गलवान घाट हिंसक झड़प तक, क्रमशः उसके पहले या इसके बाद भारत को लेकर चीन के जो अंतर्राष्ट्रीय व्यवहार दिखते आए हैं, उससे तो यही प्रतीत होता है कि चीन भारत का मजबूत दुश्मन है। नेहरू-मोदी की मित्रता की भावना को उसने कुचला है। हालाँकि अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों से पता चलता है कि भारत ही ईसाईयत और इस्लाम से सम्भाव्य मुकाबले लिए हिंदुत्व (भारत) को बुद्धत्व (चीन) की जरूरत पड़ेगी, लेकिन इसके लिए दोनों देशों को समझदारी भरी दूरदर्शिता दिखानी पड़ेगी, अन्यथा वैश्विक परिस्थितियों की धर्मांध चक्की में दोनों देश पिसे जाएंगे और युगों-युगों तक पछलाएंगे।

इसलिए स्वाभाविक सवाल है कि भारत का असली दुश्मन कौन है? तो जवाब होगा कि भारत के कई दुश्मन हैं और इसके कारण भी अलग-अलग हैं। जहाँ तक राजनीतिक नजरिए और भौगोलिक सीमाओं का सवाल है तो चीन हमारा दुश्मन नम्बर वन है। वहीं, पाकिस्तान दुश्मन नम्बर 2, बंगलादेश दुश्मन नम्बर 3, नेपाल दुश्मन नम्बर 4, श्रीलंका दुश्मन नम्बर 5, मालदीव दुश्मन नम्बर 6, म्यांमार दुश्मन नम्बर 7, अफगानिस्तान दुश्मन नम्बर 8 और भूटान दुश्मन नम्बर 9 हैं। इन सबकी दाँपेंच भरी नीतियों से भारत किसी न किसी रूप में परेशान रहता है, क्योंकि अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी, रूस और पश्चिमी देशों के शह पर ये भारत विरोधी नीतियों पर बहुधा अमल करते आए हैं।

इस भी पट्टे: 2012 के टट्टव की कहानी, 183 करांड अमरीका एषन
 वारत आए, मोदी से मिलने के बाद मस्क ने क्यों ले लिया बड़ा एक्शन
 बातें, सांस्कृतिक नज़रिए से हिन्दू रीतिथी होने के कारण कहु इस्लाम,
 ईसाई, सिख, बौद्ध आदि के आंतरिक गठजोड भी भारत के लिए
 अस्तीन के सप जैसे हैं। क्योंकि पाकिस्तान, तुर्किये, ईरान आदि की
 शह पर कभी मुस्लिम देशों के संघ द्वारा, तो कभी ईसाई देशों के संघ
 द्वारा और इनके द्वारा कारोबारियों द्वारा भारत के खिलाफ पड्यंत्र रचे
 जाते हैं। साथ ही जैसे भारतीय मूल वाले सिख धर्म से जुड़े विदेशी
 लोगों को कनाडा-यूएसए द्वारा, दलित बौद्धों को चीन द्वारा भड़काया
 जाता है, अलगवाववाओं को बढ़ावाया जाता है, वह भी भारत के भविष्य
 से दुश्मनी जैसी ही है। क्योंकि इनको शह देने वाले मुस्क भारत के
 हिंदुओं की जातीय और क्षेत्रीय भावनाओं को भड़काकर न केवल
 धर्मांतरण कराते हैं, बल्कि वह युद्ध के बीज भी पत्र-पत्र-सर्वत्र बुनते
 रहते हैं। दलित-ओबोसी साहित्य, साम्प्रदायिक इतिहास को शह आदि
 इनके सांस्कृतिक औजार बन चुके हैं।

वहाँ, अंतराष्ट्रीय कूटनीति में गुटनिरपेक्षता, सत्य व अहिंसा से अभिप्रेरित वसुधैव कुटुम्बकम्, सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः जैसी उदात्त सोच से ग्लोबल साउथ मतलब तीसरी दुनिया के देशों के हितों की वकालत के चलते भी पश्चिमी राष्ट्र कनाडा, इंग्लैंड, जर्मनी, इटली आदि भारत से कभी प्रत्यक्ष और कभी परोक्ष शत्रुता रखते आए हैं।

हालांकि, कड़वा सच यह है कि भारत के असली शत्रु हमारे मूढ़ राजनेता हैं, जो 'महाभारत' काल से अभिप्रेरित सार्थक नीतियों को प्रोत्साहन देते तथा राष्ट्रवाद-हिंदुवाद को संश्लिष्ट करने के बजाय पंथभेदी लोचन से प्रेरित उस शुद्ध धर्मनिरपेक्षता की कवालत करते आए हैं जो एक अंतर्राष्ट्रीय नैतिक महामारी समझी जाती है। चूंकि इसके सिद्धांत और व्यवहार में काफी अंतर दुनिया के देशों में पाया जाता है, इसलिए एशियाई संदर्भ में यह धर्मनिरपेक्षता भारत की प्राचीन सनातन संस्कृति को कुचलने का एक बौद्धिक हथियार समझी जाती है।

इसके अलावा दलित-महादलित, पिछड़ा-अल्प पिछड़ा को जातीय अवधारणा, आदिवासी और आर्य के अंतर्राष्ट्रीय विभेद, अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक के धार्मिक विभेद, भाषाई क्षेत्रवाद और एक समान कानून बनाने के बजाय आभिजात्य वर्गों के हितों के मुताबिक कानून निर्माण और इनको लेकर बहुमत-अल्पमत की आत्माघाती राजनीति जैसे संवैधानिक सवाल हैं जिसका विवेकसम्मत समाधान हमारे राजनेताओं को देना चाहिए लेकिन वह पीछे 75 साल में वह इस मामले में विफल रहे हैं।

इस जनराए स संविधान संरक्षण का लकर अरबवका न्यायिक हठ अर कुतर्क भी एक बडी वजह है जिससे धर्मनरपेक्षा जैसी दुच्छी सोच भाग्यवित है। वही जातीयता आदि विधि वयस्था के सवाल पर प्रशासनिक पूर्वाग्रह भी एक राजनैतिक त्रासदी ही है। इसलिए भारत के इस असली शत्रु को यदि हमलोग पहचान लिए, वैदिक संस्कृति के मुताबिक यहां के जनमानस को ढाल लिए, राजनीतिक अश्वमेध यज्ञ को पुनः शुरूआत कर लिए, तो भारत के जितने भी प्रत्यक्ष या परोक्ष शत्रु हैं, सबके दांत खट्टे किए जा सकते हैं।

निःसन्देह, बदलते विश्व का यही डिमांड भी है, जिसका लेकर भारत के लोगों के बीच सांस्कृतिक व राजनीतिक जागरूकता फैलाने की जरूरत है। इससे अखण्ड भारत यानी महाभारत के सपनों को पुनः हासिल करना आसान हो जाएगा।

दूर छोड़ आया हूं

गांव की खेती मीठी यादे,
अपने सुख-दुख की परियादे,
लौट आने के इरादे,
किए थे कुछ कसमें और वादे,
खुद को भी चुका हूं भूल,
पैरों में चुभे हुए शूल,
सूरज उबने से पूर्व नहा आया हूं,
भूल कर सब कुछ दूर छोड़ आया हूं।

वा नाक झोंक छाटी बड़ी,
क्रोध और मोह की हथकड़ी,
मिट्टी से सने पाँव,
सीने पर लगे घाव,
कुएं का ताजा ठंडा पानी,
बुजुर्गों के मुँह से सुनी कहानी,
खून-पसीने से भाग्य लिखने आया
हूँ,
भूल कर सब कुछ दूर छोड़ आया
हूँ।

पागड़ों के किनारे लगा झाड़ियाँ,
खेलते बच्चों की किलकारियाँ,
खेत के किनारे बतियाना,
पेड़ पर चढ़कर गीत गुनगुनाना,
पशु पक्षियों पेड़ पौधों का प्यार,
याद आता है अब भी दुलार,
तूफान आंधी वर्षा से लड़ कर आया
हूँ,
भूल कर सब कुछ दूर छोड़ आया
हूँ।

पेड़ पर चढ़ फलों का सेवन करना,
नदी -नालों को कूद कर पार करना,

टीलों पर चढ़कर सूखी लड़कियाँ
तोड़ना,
खटपट होते रिश्तों को जोड़ना,
पहाड़ों पर लगते मेले,
जिंदगी के रोज के झमेले,
जीने के लिए कुछ कमाने आया हूँ,
भूल कर सब कुछ दूर छोड़ आया
हूँ।



डॉ. विनोद कुमार शर्मा, चंडीगढ़।

મંથન

शिक्षा में स्मार्टफोन के प्रचलन से एकाग्रता एवं हेल्थ खतरे में



साथ, यह आवश्यक हो गया है कि स्मार्टफोन और इंटरनेट का सही उपयोग और सुरक्षित उपयोग को सुनिश्चित किया जाए ताकि बच्चे को सामाजिक विकास सही दिशा में एम्बेड करने में मदद मिले। निम्नलिखित, शिक्षा के क्षेत्र में मोबाइल प्रयोगों में मोबाइल की अपेक्षाओं को महिगे स्कूलों में स्टेट्स संबलित बनना दिया है। लेकिन हालिया वैश्विक सर्वेक्षण बता रहा है कि विभिन्न देशों में अत्यधिक मोबाइल प्रयोग विद्यार्थियों के लिये मानसिक स्वास्थ्य व शारीरिक समस्याएं पैदा कर रहा है। है सर्वविदित है कि विभिन्न ऑनलाइन शैक्षिक कार्यक्रमों में मोबाइल चलते छात्र-छात्राओं में मोबाइल फोन का इस्तेमाल तेजी से बढ़ा है। सामाजिक पब्लिक स्कूलों में ऑनलाइन शिक्षा के लिए मोबाइल फोन का इस्तेमाल अनिवार्य तक बना दिया है। कम्प्यूटर सरकारी स्कूलों में ऐसी बाधता नहीं है। लेकिन वैश्विक स्तर पर किए गए सर्वेक्षणों से यह तथ्य सामने आया है कि स्मार्टफोन एक हद तक तो सीखने की प्रक्रिया में मददगार साबित हुआ है, लेकिन इसके नकारात्मक प्रभावों को भी नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए। ज्यादा मोबाइल

का इस्तेमाल करने से पढ़ाई में बाधा आती है, नैसर्गिक शैक्षणिक गुणवत्ता अहत होती है। भारत में 21 राज्यों के ग्रामीण समुदायों में 6-16 वर्ष की आयु के स्त्री लड़कियों के 6,22,98,000 अभिभावकों के बीच किए गए अश्विल भारतीय सर्वेक्षण से पता चला कि अधिकतर बच्चे पढ़ाई के बजाय मनोरंजन एवं अश्वील सामग्री के लिए स्मार्टफोन का उपयोग कर रहे हैं। सर्वेक्षण में कहा गया है कि जिन छात्रों के पास गैजेट्स हैं, उनमें से 56.6 प्रतिशत ने डिवाइस का इस्तेमाल मूवी डाउनलोड करने और देखने के लिए किया, जबकि 47.3 प्रतिशत ने उनका इस्तेमाल संगीत डाउनलोड करने और सुनने के लिए किया। सर्वेक्षण से पता चला है कि ग्रामीण भारत में 49.3 प्रतिशत छात्रों के पास स्मार्टफोन की पहुंच है, लेकिन उनमें से केवल 34 प्रतिशत ही पढ़ाई के लिए इसका इस्तेमाल करते हैं। वैश्विक स्तर पर, आज दुनिया भर में 6.378 बिलियन स्मार्टफोन उपयोगकर्ता हैं—जो कि कुल आबादी का लगभग 80.6 प्रतिशत है। इसमें दो मत नहीं हैं। एक समय महज बातचीत के

परिया माना जाने वाला मोबाइल फोन आज दैनिक जीवन की जरूरतों को पूरा करने वाला बेहद जरूरी उपकरण बन चुका है। खासकर कोरोना संकट के चलते स्कूल-कालेजों के बंद होने के बाद तो यह पढ़ाई का अनिवार्य हिस्सा बन गया। आलाइनर कक्षाओं के बढ़ते प्रचलन में लगने लगा था कि इसके बिना तो पढ़ाई संभव ही नहीं है। लेकिन नाना बच्चों के हाथ में मोबाइल बंदर के हाथ में उमरें जैसा ही साबित हुआ है। निश्चित तौर पर ये उनके भटकाव, गुमराह, दिग्भ्रमण और मानसिक विलापन का कारण भी बना है। इसी कारण कई देशों में स्कूलों में स्मार्टफोन पर बैन लगा दिया है, क्योंकि इन देशों का मानना है कि यह बच्चों की शिक्षा और उनकी गोपनीयता पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। अनेक देशों में हुए सर्वेक्षणों ने स्मार्टफोन के उपयोग से विद्यार्थियों पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों पर चिंता जतायी है। इनकी रिपोर्ट एवं चौंकाने वाले तथ्य भारत में शिक्षा के नीति-निर्णयों की आँख खोलने वाले हैं। यूनेस्को की टीम के मुताबिक बीते साल के अंत तक कुल पंजीकृत शिक्षा प्रणालियों में से

गालीस फीसदी ने सख्त कानून या नीति बनाकर स्कूलों में छात्रों के स्मार्टफोन के प्रयोग पर रोक लगा दी है। दरअसल, आधुनिक शिक्षा के साथ आधुनिकीकरण एवं विकास की अपेक्षा को दर्शा कर तत्कालीन स्मार्टफोन के मोबाइल स्कूलों के उपयोग को अनिवार्य बना दिया गया। निस्संदेह, आधुनिक समय में स्मार्टफोन कई तरह से शिक्षा में मददगार है। लेकिन यहां प्रश्न इसका अनिवार्यता एवं अव्याप्त प्रयोग है। है। साथ ही दुनिया में अनियंत्रित इंटरनेट पर पोसी जा रही अनुचित, अश्लील, अनुपयोगी सामग्री उसके बच्चों पर पड़ने वाले उसके दुष्प्रभावों पर भी दुनिया में विमर्श जारी है। मोबाइल फोन का अत्यधिक उपयोग छात्रों के मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित है तथा इसके लगातार उपयोग से चिंता का स्तर बढ़ता है, आत्म-सम्मान कम होता है तथा अकेलेपन की भावना बढ़ती है। इसका अधातुधन व गलत उपयोग छात्रों भी हो सकता है। दरअसल, स्मार्टफोन में व्यक्तकों से जुड़े तथ्यांक एप ऐसे भी हैं जो समय से पहले बच्चों को व्यस्त बना रहे हैं। उन्हे बचो कुटित बना रहे हैं। बड़ी

मोदी, ट्रम्प और व्यावसायिक हित

- अरविन्द मोहन

अमेरिकी यात्रा और इस तरह के फैसले करने करने की तैयारी उसके पहले शुरू हो गई थी और अभी भी चल रही है। अभी भी इस्यात और अत्यधिक मुश्किल पर सीमा शुल्क पच्चीस फीसदी करने की माथापन्थी चल रही है क्योंकि ट्रम्प ऐसा चाहते हैं। ट्रम्प विजय व्यापार संगठन के जरिए बनी वैश्विक व्यापार नियमों से खासे खुश है। शेयर बाजार में चल रही मौजूदा अस्थिरताओं की गिरावट में बाजार के कुछ बड़े और कुशल खिलौनाइयों को कितने का नुकसान हुआ है यह हिसाब बताना आने लगा है। कई का नुकसान लगभग एक तिहाई तक का है पर कुल मिलाकर बाजार इतना नहीं गिरा है। लेकिन ऐसे शीर्षीय वाले लोगों का नुकसान अगर कुछ सौ करोड़ का है तो हमारे शेयर बाजार की सारे निवेशकों का नुकसान दसैक लाख करोड़ रुपए से अधिक का हो चुका है और उसकी चर्चा कम है। यह ऐसा आम लोगों का तो है ही। उनके बँके जमा, प्रविडेंट फंड, साझा कोश और बीमा कंपनियों को चुनाए उनके प्रीमियम का रकम का है। और आम तौर पर यह धन शेयर बाजार के अर्थात डोनाल्ड ट्रम्प के फिर से राष्ट्रपति बनने के बाद लिए उन फैसलों और अर्थव्यवस्था वाले फैसलों की आशंका से इसका रिश्ता है जिस वे अमेरिका को फिर से सफल बनाने के अपने वायदे के हिसाब से ले रहे हैं या लेने वाले हैं। इस अर्थव्यवस्था हमारे रुपए को गोता लगाने से बचाने के लिए (फिर भी उसने अच्छी तरह से अमेरिकी गिरावट दर्ज की है) रिजर्व बैंक ने किटना दृष्टि-गणनाया किया है वह अलग हिसाब है पर उसने हमारी गारंटी कमाई के हजारों करोड़ मूल्य के डालर बाजारों में उतारे हैं। और मोदी जी की शुक्रांत में पच्चीस हजार के रेट वाले डॉलरों ने आज प्रति दस ग्राम नब्बे हजार का स्तर छूकर कितनों को रकता है। यह हिसाब भी आसानी से लगाया जा सकता है। कोई उम्मीद कर सकता है कि जब हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमेरिका यात्रा की और ट्रम्प से मिले या उनके पहले विदेशी मंत्री जयशंकर ने अमेरिका की ओर डाला था। तो वे जरूर महाबली अमेरिका के इस राष्ट्रपति से अपना दुखद कहेंगे और अभी तक जारी अच्छे राजनयिक संबंधों के आधार पर अपनी परेशानियों का समाधान चाहेंगे, अमेरिका-भारत संबंधों में इसके चलते खटास न आए, इसका मतलब मतलब मतलब। ट्रम्प दोबारा चुनाव जीतकर कुछ ज्यादा ही आत्मविश्वास के अर्धमर्यादित व्यवहार पर उतरे लगे हैं, शायद ग्रहण करने के साथ ही उन्होंने दो सौ से ज्यादा बड़े फैसलों पर दस्तखत करके दुनिया को 'हदला' दिया था और अभी तक उसका उत्साह जारी है। इस उत्साह को दुस्साहस बताने वाले अमेरिका नहीं है क्योंकि इससे अमेरिका का लाभ/घाटा क्या होगा यह हिसाब नुकसान की तरफ जाता लगता है। कहा जाता है कि ट्रम्प इस बात से ज्यादा खुश न थे कि उनका मित्र माने जाने वाले मोदी ने बाइडेन प्रशासन से भी अत्यधिक अच्छे संबंध रखे और चुनाव हारने के कारण उनकी तरफ पूरी फेर लिया था। इसलिए मोदी और ट्रम्प की दोस्ती के पक्षधर इस बात को लेकर खुश हैं कि इस बात में प्रधानमंत्री पुरानी गंभीरता हासिल करने में सफल रहे। आबातचीत, व्यवहार, राजनयिक शिथिलता से लेकर इस यात्रा में हुए समझौते के आधार पर ऐसा नहीं लगता क्योंकि सारा हिसाब अमेरिका के पक्ष में झुका हुआ है। और साझा प्रेस कांफ्रेंस में ट्रम्प ने जिस तरह से मोदी जी के प्रति आभार व्यक्त किया वह सामान्य न था, बल्कि कई बार तो वह खिल्ली उड़ाने के करीब तक पहुंच गया। और मोदी जी ट्रम्प प्रशासन के करीबी उद्योगी एलन मास्क से मिलने और उनके भारत से व्यावसायिक रिश्ते बनाने को लेकर बेजाने बेचैन रहे हैं उसमें उनका व्यवहार भी सामान्य शिष्टाचार बताना न था। वे प्रधानमंत्री से भेंट में अपनी पत्नी, बच्चों के साथ बच्चों की देखरेख करने वाली सहायिका को भी लेकर पहुंचे थे। और सामान्य निष्कर्ष यही रहा कि इस यात्रा से भारत- अमेरिकी दोस्ती में कोई कड़वाहट न आई या ऐसा कुछ था जो उससे खुश हुआ लेकिन कुल मिलाकर अमेरिका लाभ की स्थिति में रहा। उसने ममाना व्यावसायिक करार किए और भारत ने ज्यादा ना नुक़र न करती हुए उन्हें स्वीकार किया।

मुख्य निर्वाचन आयुक्त की जल्दबाजी में नियुक्ति



चुना गया था।
निवर्तमान मुख्य निवाचन
आयुक्त राजीव कुमार का
कार्यकाल कई किस्म के
विवादों में घिरा रहा। आरोप
लगे कि उनके रहते आयोग ने
भाजपा की सुविधाधनसार
चुनावी कार्यक्रम बनाना, सिर्फ
विरोधी दलों के खिलाफ
कार्रवाई करना, भाजपा के
गलत कार्यों की अनदेखी
करना, आचार संहिता का
प्रतिपक्ष को दबाने में इस्तेमाल
करना और विरोधियों को न
सुनना जैसे कार्य किए। उनके
दौर में हुए लगभग हर चुनाव
में गड़बड़ी की शिकायतें
विपक्ष ने कीं। ईवीएम में
छेड़छाड़ से लेकर मतदाता
सूची की गड़बड़ी जैसे गंभीर
आरोपों के सवाल उठे, मतदान
खत्म होने के कुछ घंटों के
बाद वोटिंग का प्रतिशत बढ़
जाना, मतगणना बीच में रुकने
या धीमी होने के बाद कुछ ही
मिनिटों में हाarti हुई भाजपा
की सीटों का इतना बढ़ जाना
कि वह राज्यों में सरकार बनाने
ले आदि ऐसी घटनाएँ हैं जो
हमेशा संहत के घरे में रहंी
विपक्ष ने भाजपा की जेबी
संस्था, चुनाव आयोग जैसे शब्द
चुनाव आयोग के लिए कितनी
ताकि उसके आरोपों की

भीरीतर ससईी ढल। ललकन-
लन सलकल कलई असर संभवतः
सरकलर पर नई हुल।
ललकतंत्र के पक्ष में वे सलऐे
ललऐ ढल ऐक स्वतंत्र, सजबूत
और नलषक्ष ढुनलव अलऐल क
उसडीर रलऐ ढुमार के ढलने
के डलड ललऐे डैठे थे, वे
इसललऐे सलऐूस हैं ढुकीक उन्हे
वलखलत डलवलल कल अब कलई
उसडीर नई रह गलई हैं ढुकीक
नऐे सीईसी कल उसी धलरल स
तैरनल लऐडलत तऐ सलनल ढल रह
है।
सीईसी के रूड में ढलनेश क
कलर्यलकल ढनडरी, 2029 तक
रहेगल। इस दूरलन उनकर
देखरेख में लऐडलत 20
वलधलनसडल ढुनलव हलऐे तथल
अलऐरी ललऐसडल के ललऐे
2029 में हलने वलली सलरी थल
तैरलरलऐल वे करके ढलऐऐे- यलल
उन्हे सेवा वलस्तर नई सललत
ऐे।
ऐुसल तडी हलल यलद वे रलऐल
ऐुसल कल डलनई ललक स
हटकर कलम करऐेग; ढलसक
उसडीर कल है।
केन्द्रीय नलऐलढन अलऐल
हऐेश ढलऐडल सरकलर कल ऐेड
में डनी रहे, इसकी तैरलरल
पहले से कर ली गलथ थी।
2023 में सीईसी नलऐुतल
अधलनलड में संशुधन कर



अब मंदिर में अस्पताल होगा, पहले अस्पतालों में मंदिर होते थे - धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री

छतरपुर,। मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले के बागेश्वर धाम में रविवार (23 फरवरी) को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कैसर हॉस्पिटल का भूमि पूजन करेंगे। बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने इसे सब के लिए गर्व की बात है। अब तक अस्पतालों में मंदिर होते थे, लेकिन अब मंदिर में अस्पताल होगा। यह एक नवाचार होगा जो

बुंदेलखंड, मध्य प्रदेश और पूरे भारत के लिए एक नई दिशा प्रदान करेगा। उन्होंने कहा कि इस अस्पताल में केवल चिकित्सा सुविधा नहीं, बल्कि बागेश्वर धाम से आशीर्वाद के रूप में भोजन और बालाजी का भजन भी मिलेगा। इस जगह से न केवल इलाज मिलेगा, बल्कि जीवन की नई राह भी मिलेगी। उन्होंने आगे कहा कि इस कार्यक्रम में प्रमुख अतिथियों के रूप में परम पूज्य जगत गुरु, पूज्य अचानंद मुनि महाराज, ऋतम्भ दीदी मां,



मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव और राज्यपाल मंजू पटेल भी

उपस्थित रहेंगे। इस कैसर अस्पताल का निर्माण चार चरणों में होगा और

सांसद नवीन जिन्दल स्वास्थ्य सेवाओं में दिन कर रहे है अच्छा कार्य : विजेंद्र मैहला नवीन जिंदल फाउंडेशन द्वारा गांव जाजनपुर में नवीन संकल्प शिविर

हरियाणा वाटिका/विकास कुमार

कैथल, 24 फरवरी। गांव जाजनपुर में नवीन जिंदल फाउंडेशन द्वारा नवीन संकल्प शिविर के तहत गांव जाजनपुर के पंचायत घर में कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें लोगों को पेंशन, परिवार पहचान पत्र, नवीन जिन्दल यशस्वी छात्रवृति योजना और मोबाइल मेडिकल यूनिट के माध्यम से स्वास्थ्य सेवाएं (निःशुल्क दवाइयां व ब्लड टेस्ट उपलब्ध कराई गईं। शिविर का शुभारंभ गांव के सरपंच जोगिंद्र शयोकंद व ढांड मंडल अध्यक्ष विजेंद्र मैहला द्वारा किया गया। भाजपा नेता विजेंद्र मैहला जड़ौला ने कहा कि सांसद नवीन जिन्दल स्वास्थ्य सेवा में अच्छा कार्य कर रहे हैं।

प्राथमिक उपचार के लिए मोबाइल मेडिकल यूनिट वाडों, कॉलोनियों और संसदीय क्षेत्र के सभी गांवों में अपनी सेवाएं दे रही हैं। आधुनिक तकनीक से सुसज्जित ये मोबाइल



मेडिकल यूनिट निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाएं दे रही है। सांसद नवीन जिन्दल जरूरतमंदों की सेवा करने के लिए समर्पित हैं। मरीजों को दवाइयां और परामर्श निःशुल्क उपलब्ध करवाया जा रहा है। गांव के सरपंच जोगिंद्र शयोकंद जाजनपुर ने कहा कि छात्रों को

यह अस्पताल चिकित्सा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगा। बता दें कि प्रधानमंत्री मोदी 23 फरवरी को मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में चिकित्सा विज्ञान एवं अनुसंधान संस्थान का भूमिपूजन करेंगे। राज्य के गढ़ा गांव में बागेश्वर धाम जन सेवा समिति द्वारा 100 बिस्तरों से अधिक क्षमता वाले मल्टी-स्पेशलिटी अस्पताल सह कैसर अनुसंधान केंद्र का निर्माण किया जा रहा है।

जिसका अस्पताल, जिसका

प्रधानमंत्री मोदी शिलान्यास करेंगे, 218 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से बनाया जाएगा। आधिकारिक बयान के अनुसार, इस परियोजना के लिए कुल 10.925 हेक्टेयर भूमि की पहचान की गई है। अस्पताल का निर्माण 36 महीने में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। पहले चरण में अस्पताल में 100 बिस्तरों की सुविधा होगी, जिसमें अत्याधुनिक मशीनों और विशेषज्ञ डॉक्टर होंगे, जिससे वंचित कैसर रोगियों का मुफ्त इलाज किया जा सकेगा।

शहर की सफाई व्यवस्था होगी दुरुस्त :-

एसडीएम

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

महेंद्रगढ़, 24 फरवरी। शहर की सफाई व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिए एसडीएम अनिल कुमार यादव ने अधिकारियों को निर्देश जारी किए हैं। उन्होंने कहा कि महेंद्रगढ़ शहर के भीड़ वाले क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। शहर के सब्जी मंडी, बस स्टैंड इत्यादि स्थानों पर प्रतिदिन सफाई की जाएगी। उन्होंने अधिकारियों की बैठक लेकर यह निर्देश दिए हैं। एसडीएम ने कहा कि नगर पालिका क्षेत्र में सफाई व्यवस्था और नियमित कचरा उठाने को प्रभावी ढंग से सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के अधिकारियों को भी सीवरेज व्यवस्था को दुरुस्त करने के निर्देश दिए हैं।

एसडीएम ने कहा कि अधिकारी कचरे का उठान भी नियमित रूप से करवाएं, ताकि कचरे में आग लगाने संबंधी घटनाएं ना हो सके। उन्होंने कहा कि कचरे में आग लगाने से इससे निकलने वाला धूआं व गैस पर्यावरण को प्रदूषित करती हैं और मानव स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक होती हैं। इससे आखों व सांस संबंधी बीमारियां होने का खतरा बना रहता है। अधिकारी यह सुनिश्चित करें कि सार्वजनिक स्थानों, ग्रीन बैल्ट, सड़कों के किनारों आदि पर किसी भी प्रकार का कचरा पड़ा हुआ ना हो। उन्होंने आमजन से भी आग्रह किया कि वह कचरे को अधिकृत स्थान पर ही डालें। इधर-उधर कचरा ना फैकें क्योंकि इससे गंदगी फैलेगी, जिससे नागरिकों को ही परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

नर्सरी की सिम्पल रेस में तवीश ने मारी बाजी, जैनिश रहे द्वितीय व वृन्दा तृतीय



हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

कुरुक्षेत्र/शाहाबाद, 24 फरवरी। डिवाइन पब्लिक स्कूल शाहाबाद में आयोजित खेल दिवस में नर्सरी, एल्केजी और यूकेजी के बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत स्कूल प्रबंधक डॉ. गुरदीप सिंह हेयर ने दीप प्रचलित कर की। बच्चों के लिए मंजेदार और रोचक खेल रखे गए। प्रधानाचार्या राजिन्द्र खुब्ड़, उपप्रधानाचार्य मनीश मलिक और स्कूल हेड मनमीत सिधु रस्थावा ने सभी बच्चों को खेलों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा कि खेल दिवस बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण होता है। इस खेल दिवस में बच्चों के दादा-दादी को आमंत्रित किया गया। सभी बच्चों के दादा-दादी विजय के उमका उत्साहवर्धन किया। अंत में विजेता बच्चों को मैडल देकर सम्मानित किया गया। कक्षा नर्सरी की सिम्पल रेस में प्रथम तवीश, द्वितीय जैनिश और तृतीय वृन्दा रही। बारवी रेस में प्रथम मानवी, द्वितीय जानवी, तृतीय अदिति रही। कैरेट रेस में प्रथम सानवी, द्वितीय लक्षित, तृतीय नतौरा व साराश रहे। कक्षा नर्सरी के दादा-दादी में प्रथम बुध राम (अरून्ध) रहे। द्वितीय जसविन्द्र कौर (काशविक) तृतीय हरबंस कौर (उमंग) रही।कक्षा एल्केजी की कोन रेस में प्रथम विरेन, द्वितीय पुजांशी, तृतीय मनीकुश व मनकीरत रहे। पार्टनर रेस में प्रथम रियांशी व आयुष, द्वितीय रवनीत व यूविन, तृतीय गर्वित व अगमजोत रहे। बैग पैक रेस में प्रथम गुरफतेह व इशिका, द्वितीय रबरीत कौर रहे। बॉल बैलसिंग रेस में प्रथम विवान, द्वितीय गुनताज, तृतीय विदाशी रहे। कक्षा यूकेजी में श्रीलेग रेस में प्रथम जानवी व रिधि, द्वितीय ऐशप्रीत व ध्रुविका, तृतीय शिवांश व सानवी रहे। बॉल रेस में प्रथम गुरराज, द्वितीय अनिक व तृतीय रवलीन रहे। ब्लेसिंग रेस (ग्लॉस आन द प्लेट) में प्रथम कियारा व अरेयांश, द्वितीय नवनीत कौर, तृतीय यंशवी व नायरा रही। टंग आफ चार रेस में प्रथम हिमांक, मयंक, रियांश, रिदम, भूविक, गुरशान, जयवीर, वंश, विभौर व हार्दिक रहे। दादा-दादी की म्यूजिकल चेयर रेस में पुष्पा रानी (साराश) प्रथम रही व अनिल शर्मा (नविश) द्वितीय रहे।

अटेली –कनीना नगर पालिका चुनाव-2025 : सेकेंड रेंडमाइजेशन से पोलिंग पार्टियों की ड्यूटी तय

हरियाणा वाटिका/ब्यूरो

नारनौल, 24 फरवरी। आगामी 2 मार्च को अटेली तथा कनीना नगर पालिका में होने वाले चुनाव के लिए आज सामान्य पर्यवेक्षक योगेश कुमार की अध्यक्षता में एनआईसी द्वारा तैयार ईडीएमएस ऑनलाइन सॉफ्टवेयर के जरिए पोलिंग पार्टियों की ड्यूटी तय करने के लिए सेकेंड रेंडमाइजेशन की गई।

अटेली नगर पालिका में 12 वार्ड हैं तथा कनीना नगर पालिका में कुल 14 वार्ड हैं। आज रेंडमाइजेशन के जरिए पोलिंग स्टॉफ को संबंधित नगर पालिका में ड्यूटी तय की गई। अब 1 मार्च को पोलिंग पार्टियों को रवाना करते समय इन्हें संबंधित बूथ की जानकारी दी जाएगी। इस मौके पर कनीना के आरओ जितेंद्र सिंह, अटेली के आरओ रमित यादव, डीआईओ प्रशांत कुमार तथा सिस्टम एनालिस्ट राजकुमार के अलावा अन्य अधिकारी भी मौजूद थे।

समाज को जोड़ने का कार्य करते हैं कला व संस्कृति : डॉ गगनदीप कौर

पलवल कॉलेज में उमंग सांस्कृतिक महोत्सव सम्पन्न

कबीरा खड़ा बाजार में

नाटक रहा अव्वल

हरियाणा

वाटिका/एकजोत

कुरुक्षेत्र, 24 फरवरी।

राजकीय

कन्या

महाविद्यालय पलवल में

सांस्कृतिक प्रकोष्ठ द्वारा

आयोजित दो दिवसीय बसंत सांस्कृतिक महोत्सव उमंग का रंगारंग समापन हो गया। प्राचायां डॉ गगनदीप कौर ने विजेता प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र व नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया। उन्होंने कलाकारों को संबोधित करते हुए कहा कि कला व संस्कृति समाज को जोड़ने का कार्य करते हैं। संगीत साहित्य में कला मनुष्य में संवेदनाओं का निर्माण करती हैं। सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के प्रभारी डॉ कृष्ण कुमार ने बताया कि नाट्य विधा में भीष्म साहनी द्वारा रचित कबीरा खड़ा बाजार में प्रथम, मोहन राकेश द्वारा रचित मलबे का मालिक दूसरे और धर्मवीर भारती द्वारा रचित अंधा युग तीसरे स्थान पर रहा। हरियाणवी नृत्य में रेजी ने प्रथम स्थान हासिल किया, जबकि पंजाबी नृत्य में बीकॉम की छात्राओं निर्मलप्रीत प्रथम, साक्षी द्वितीय व कमलप्रीत तृतीय रही। साधारण नृत्य विधा में बीए अंतिम वर्ष की निभा ने पहला एवं एमए हिंदी द्वितीय वर्ष की शिल्पा ने दूसरा व रजनी ने तृतीय स्थान हासिल किया। निर्णायक मंडल की भूमिका डॉ रूपा, डॉ जितेंद्र, डॉ राजबीर, डॉ हृदिश कौर व डॉ कोमल ने निभाई। इस दौरान चीफ प्रॉक्टर डॉ मीनाक्षी, डॉ बीर इंदौर कौर, डॉ सतीश गर्ग, डॉ मंजीत कौर, प्रो मोनिका व प्रीति शर्मा मौजूद रहे।